श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥
जाके बल गिरिवर काँपै। रोग दोष जाके निकट न झाँपै ॥
अंजनी पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई॥

आरती कीजै.....

दे बीरा रघुनाथ पठाए। लंका जारि सिया सुधि लाए ॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई ॥

आरती कीजै.....

लंका जारि असुर संहारे । सियारामजी के काज सँवारे ॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्रान उबारे ॥

आरती कीजै.....

पैठि पाताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे ॥
बाएं भुजा असुर दल मारे । दहिने भुजा संतजन तारे ॥

आरती कीजै.....

सुर नर मुनि जन आरती उतारें।जै जै जै हनुमान उचारें ॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई॥

आरती कीजै.....

जो हनुमानजी की आरति गावै बसि बैकुण्ठ परम पद पावै ॥
लंक विध्वंस कीनहीं रघुराई। तुलसीदास प्रभु कीरति गाई॥

आरती कीजै.....